16-01-2013 XII IInd pre board Exam

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN- ERNAKULAM REGION

SECOND PRE BOARD EXAMINATION 2012-13

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, एरनाकुलम संभाग

द्वितीय बोर्ड पूर्व परीक्षा , वर्ष 2012-13

कक्षा : बारहवीं **अधिकतम अंक: 100**

विषय: हिन्दी (केन्द्रिक) **समय : 3 घंटे**

निर्देश : इस प्रश्न पत्र में क, ख और ग तीन खण्ड हैं।

सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

उत्तर लिखने से पहले प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड क

1 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **1×5=5**

कलम आज उनकी जय बोल
पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रही लू लपट दिशाएँ
जिनके सिंहनाद से सहमी
कलम आज उनकी जय बोल
अंधा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास विचारा
साखी हैं उसकी महिमा के-
सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल।
कलम आज उनंकी जय बोल

क) स्वाधीनता के शहीदों के सिंहनाद से धरती आज भी क्यों डोल जाती है?

ख) 'क्या जाने इतिहास बिचारा' कहकर कवि इतिहास को अंधा क्यों मानता है?

ग) स्वाधीनता के वीर बलिदानियों की महिमा के साक्षी भूगोल-खगोल क्यों बताए गए हैं?

घ) कलम से किसकी जय बोलने की बात कही गई है और क्यों?

ङ) काव्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

2 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के जवाब दीजिए

मनुष्य नाशवान प्राणी है। वह जन्म लेने के बाद मरता अवश्य है। अन्य लोगों की भाँति महांपुरुष भी नाशवान हैं। वे भी समय आने पर अपना शरीर छोड़ देते हैं,पर वे मरकर भी अमर हो जाते हैं। वे अपने पीछे छोड़े गए कार्य के कारण अन्य लोगों द्वारा याद किए जाते हैं। उनके ये कार्य चिरस्थायी होते हैं और समय के साथ-साथ परिणाम और वल में बढते जाते हैं। ऐसे कार्य के पीछे जो उच्च आदर्श होते हैं,वे स्थायी होते हैं और बदली परिस्थितियों में नए वातावरण के अनुसार अपने को ढाल लेते हैं। संसार ने पिछली पच्चीस शताब्दियों से भी अधिक में जितने भी महापुरुषों को जन्म दिया है,उनमें गाँधी जी को यदि आज भी नहीं माना जाता तो भी भविष्य में उन्हें सबसे बड़ा माना जाएगा क्योंकि उन्होंने अपने जीवन की गतिविधियों को विभिन्न भागों में नहीं वाँटा वल्कि जीवन धारा को सदा एक और अविभाज्य माना। जिन्हें हम सामाजिक,आर्थिक और नैतिक के नाम से पुकारते हैं ,वे वास्तव में उसी धारा की उपधाराएँ हैं,उसी भवन के अलग-अलग पहलू हैं। गाँधी जी ने मानव जीवन के इस नवकथानक की व्याख्या न किसी हृदय को स्पर्श करने वाले वीर काव्य की भाँति की और न ही किसी दार्शनिक महाकाव्य की भाँति ही। उन्होंने मनुष्यों की आत्मा में अपने को निम्नतम रूप में उचित कार्य के प्रति निष्ठा,किसी ध्येय की पूर्ति के लिए सेवा और किसी विचार के प्रति स्वार्पण के वीच सतत चलने वाले संघर्ष के नाटक की भाँति माना है। उन्होंने सदा साध्य को ही महत्त्व नहीं दिया, वल्कि उस साध्य को पूरा करने के लिए अपनाए जाने वाले साधनों का भी ध्यान रखा। साध्य के साथ-साथ उसकी पूर्ति के लिए अपनाए गए साधन भी उपयुक्त होने चाहिए।

क) सामन्य मनुष्य और महापुरुष में क्या अंतर है? 2

ख) महापुरुषों को क्यों याद किया जाता है? 2

ग) गाँधी जी को भविष्य में सवसे बड़ा क्यों माना जाएगा ? 2

घ) गाँधी जी ने मानव जीवन की व्याख्या किस प्रकार की थी? 2

ङ) साध्य और साधन के विषय में गाँधी जी के क्या विचार थे? 2

च) उपर्युक्त अवतरण के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

छ) 'चिरस्थायी' का अर्थ स्पष्ट कीजिए? 1

ज) अविभाज्य, विभिन्न- इनमें प्रयुक्त उपसर्ग लिखिए। 1

झ) रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए-

उनके ये कार्य चिरस्थाई होते हैं और समय के साथ-साथ परिणाम और बल में बढते जाते हैं। 1

ञ) गद्यांश में से 'इक' प्रत्यय से बने दो शब्द छाँटिए। 1